

# **SRETITQU** EXTRAORDINARY

भाग II—इन्द्र 3—उप-सम्बद्ध (II) PARI II—Section 3—Sub-section (il)

# प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

**4.** 252]

मई बिल्ली, शंगजवार, अवैल 21, 1992/वैशाख 1, 1914

No. 252] NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 21, 1992/VAISAKHA 1, 1914

इस भाग भी भिन्न एक भरण याँ जाशी हुँ शिल्ली कि यह अलग संकारन के राज से पास भाग भाग में

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

# बिधि न्याय और फल्पनी कार्य संसालय

(कस्पनी कार्य विभाग)

प्रादेश

नई दिल्ली, 21 धाप्रैल, 1992

का. था. 291 (म्र): -- केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो गया है कि कैएयू कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि., जो कम्पनी म्रधिनियम 1956 (1956 का 1) के भ्रधीन निगमित एक सरकारी कम्पनी है, और जिनका रिजस्ट्रीकृत कार्यालय जवाहर व्यापार भवन, टालस्टाय मार्ग, नई विल्ली में है, के मूल उद्देश्य को प्राप्त करने के प्रयोजन के लिए और नीति सथा वक्षता और भ्राधिक विस्तार एवं स्टेट ट्रेडिंग कार्योरेशन ऑफ इण्डिया लि. सथा उसके सहबद्ध एककों के कार्यकरण में समन्वय सुनिश्चित करने के लिए उपस्कर, कार्मिक और सामग्री के कम साधनों का उपयोग सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए लोकहित में यह भ्रावश्यक है कि स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया लि. जो कंपनी मधिनियम, 1956 (1956 का 1) के भ्रधीन निगमित एक सरकारी कम्पनी है और जिसका रिजस्ट्रीकृत कार्यालय जवाहर व्यापार भवन, टालस्टाय मार्ग, नई विल्ली में है और

उभन केश्यू जापोरियान शाँक इण्डिया ति., जो रटेट ट्रेडिय कापोरियान ऑफ इण्डिया ति. के पूर्णतः स्वामित्याधील अमनुषंगी है, को एक कस्पनी में समामितन किया जाना चाहिए;

और प्रस्तावित घादेश के प्रारंप की एक प्रति पूर्वोत्तर कम्पनियों धर्यात् फैरम् कापोरिणन ध्रांक इण्डिया लि. और स्टेट ट्रेडिंग कापोरिरेणन ध्रांक इंडिया लि. को ध्राक्षेप/मुझाव ध्रामित करते हुए दो समा-चार पन्नों में उसके प्रकाणन के लिए 5 जून, 1991 को भेजी गई थी;

जीर पूर्वावत कम्पनियों के समामेलन की स्कीम 13 और 14 जून 1991 को वो समाचार पर्ली में प्रकाशित की गई थी जिसमें भाषोप और सुझाब मांगे गए थे; और केन्द्रीय संरकार को 20 सित-म्बर, 1991 तक समामेलन की स्कीम के संबंध में किसी व्यक्ति से कोई मुझाब था द्राक्षेप प्राप्त नहीं दूए हैं;

श्रातः, श्राव, केन्द्रीय सरकार उक्त धिश्वित्यम की धारा 396 की उपधारा (1) और (2) द्वारा प्रदक्त प्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, उक्त दोनों कम्पनियों के समामेलन का उपबंध करने के लिए निम्न लिखित धादेश करनी है; अर्थात्:--

- संक्षिप्त नाम :--इस ग्रावेश का संक्षिप्त नाम कैश्यू कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि. और स्टैट ट्रेडिंग कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि. (समामेलन) ग्रावेश, 1992 है।
- परिभाषाएं :--इस श्रादेश में, जब ताः कि सदर्भ से श्रन्थणा भ्रपेक्षित न हो ---
  - (क) 'नियत विन' से वह सारीख अभिप्रेत है जिसको यह आदेश राजपत्न में अधिसूचित किया जाता है।
  - (ख) 'विषटित कंपनी' से कैश्यू कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि स्रभिन्नेत है;
  - (ग) "परिणामी कम्पनी" से स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन आँफ इण्डिया लिमिटेड प्रभिप्रेत है।
  - 3. (क) दोनों कम्पिनयों का अंश (शेयर) ब्रारण का स्वरूप:
- (i) स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन औफ इंडिया लिमिटेड, (नियंत्रण कम्पनी) जैसा तारीख 31 मार्च, 1990 को था:---

अंश (शेयर) घारक का नाम अंशों (शेयरों ) रक्षम (रुपयों में )
की संख्या
भारत के राष्ट्रपति 300000 30,00,00,000

(ii) कैय्यू कार्पोरेणन ऑफ इण्डिया लिमिटेड (समनुषंगी कम्यनी)
 जैसा तारीख 31 मार्च, 1990 को था:---

अंश (श्रोयर) धारक का नाम अंशों (श्रोयरो) रकम (रुपयों में ) कीस.

स्टेट ट्रेडिंग कार्परिशन ऑफ इण्डिया 150000 1,50,00,000 लिमिटेड और उसके नाम निर्देशती (प्रत्येक 100 रुपए)

- (ख) कैश्यू कार्परिशन धाँफ इण्डिया लिमिटेड में प्रत्येक 100 र. बाले पूर्णतः समावत्त सभी 150000 साधारण अंगों (शेयरों) को जो ध्व स्टेट ट्रेडिंग कार्परिशन धाँफ इण्डिया लि , जिमके अनर्गत उसके माम निर्वेशिती भी हैं, के नाम में धारित हैं, रह कर दिए जाएंगे।
- (ग) गर्गोर्ट नैय्यू कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया की समस्न अंधा (शेयर) पूंजी स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया थि. के, जिससे अंतर्गत उसके नामनिर्देशिती भी हैं, नाम मे धारित हैं, परिणामी कम्पनी से ग्रह ध्रेपे- कित नहीं होंगा कि वह उन व्यक्तियों को, जिनके नाम नियत विन के ठीक पहले विचटित कम्पनी के सदस्यों के रिजस्टर में अंकित हैं, को कोई और सूचना भेजे।

#### 4. कम्पनियों का समामेलन :

(i) नियत दिन से ही, कैय्यू कार्पोरणन ग्रांक इण्डिया लि. का समस्त कारोबार और उपक्रम जहा पर भी है जिसके ग्रन्तगंत सभी संपत्तियां चाहे जंगम हो या स्थावर और अस्य ग्रास्तियां चाहे वे किसी भी प्रकार की हो, जैमे मणीनरी और सभी स्थिर, ग्रास्तियां, पटटे भूम्र्ति, ग्राधिकार श्रेयरा म जिनिधान या ग्रन्थया व्यापार मे स्टाक, कर्भ- गाला, श्रोजार, ग्राभिवहन मे माल, सभी प्रकार के धनो के ग्राग्रिम, बही- खाता ऋण, बकाया धन, बसूलीय दाने, करार, औद्योगिक और भ्रन्य धनुजन्तियां और भनुजातपत्र, भायात और प्रस्य भनुजन्तियां ग्राप्य-पत्न और सभी बंधकों और प्रभारों और भाडमान के संबंध में प्रत्येक वर्णन के सभी प्रकार और श्रिवत्या और कंप्यू कार्पोरेणन ग्रांक जिंद की उक्त सम्पति की प्रशासित करने वाले किसी भी प्रकार के सभी ग्रिकार

(प्रत्याभूति और सभी प्रक्षिकारों के प्रधीन रहते हुए) और कार्यवाही या विलेख के बिना प्रवृत्त विधि के प्रमुसार स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि. को अंतरित हो जाएंगे और उसमे निहिन हो जाएंगे और उसमे प्रस्तित और निहिन हुए समझे आएंगे।

(ii) लेखा के प्रयोजनों के लिए समामेलन, बोनो कम्पनियों के 31 मार्च, 1990 को यथा विद्यमान सपरीक्षित लेखाओं और नुलनपत्न के प्रति निर्देश से प्रवादी होगा और उसके परवात् संव्यवहारों को एक समान्य लेखा में पूल किया जाएगा । विद्यादित कम्पनी से कियी परवात- वर्ती तारीख को धपना मंतिम लेखा तैयार करने की धपेक्षा नहीं की जाएगी और परिणामी कम्पनी 31 मार्च, 1990 को यथा विद्यमान तुलन पत्न के धनुसार सभी ध्रास्तियों और दायित्वों को ग्रहण करेगी और उसके परवात के सभी मध्यवहारों के लिए पूर्ण उत्तरवायित्व स्थीकार करेंगी ।

#### स्पष्टीकरण

'विषटित कस्पनी के उपकम' के भन्तर्गत सभी ध्रधिकार, गिक्तिगी, ध्रिष्ठकार धीर विशेषाधिकार घीर सभी संपन्ति, जंगम या स्थावर, जिसके ध्रन्तर्गत नकद ध्रतिशेष, ध्रारक्षितियां, राजस्व ध्रितिशेष, विनिधान घीर ऐसी संपत्ति में या उससे उवभूत होने वाले ग्रन्य सभी हित घीर घर्षिकार, जो नियत दिन के ठीक पूर्व विषटित कम्पनी के हों, घीर उससे संबंधित सभी बहियां, नेखे धीर वस्तावेज तथा विषटित कम्पनी के उम समय वियमान सभी ऋण, दायिरव, कर्तथ्य धीर बाध्यताएं, चाहे वे किसी धी प्रकार की उस समय हों, धाती हैं।

# 5 सपत्ति की कुछ मदो का अंतरण:--

इस स्रादेश के प्रयोजन के लिए नियत दिन को यथा विद्यमान विषटित कम्पनी के सभी लाभ या हानि या दोनों, यदि कोई हों, और विषटित कम्पनी के राजस्व झारिक्षती या घाटा या दोनों, यदि कोई हो, जब परिणामी कम्पनी को संतरित होते हैं, तो वे परिणामी कम्पनी के यथा स्थित ताभ या हानि भीर राजस्व भारिक्षती या घाटे का भाग रूप होंगे।

# 6 संविवामों मादि की ब्यायुत्ति ---

इस प्रादेण में प्रंतिबंध्द प्रन्य उपबन्धों के प्राप्तीन रहते हुए, सभी मिबवाएं, विलेख, वक्षपत, करार भीर प्रन्य लिखते, बाहे वे किसी प्रकार की हो, जिनमें विधिटत कम्पनी एक पक्षकार है, जो नियत दिन से ठीक पूर्व प्रस्तित्व में हैं या प्रभावी है, परिणामी कम्पनी के विष्ण या उसके पक्ष में पूर्णन, बलशील भीर प्रभावी होगी भीर उन्हें वैसे ही पूर्ण भीर प्रभावी रूप से प्रवृत्त कि या जा सकेगा मानो परिणामी कम्पनी उनकी एक पक्षकार थी।

## विधिक कार्यवाहियो की व्यावित :

यां नियस दिन को, विषटित कम्पनी द्वारा या उसके विरुद्ध कोई वाद, श्रमियोजन, श्रपील या किसी भी प्रकृति की श्रन्य विधिक कार्यवाही लंकित है तो वह विषटित कम्पनी के उपक्रम के परिणामी कम्पनी को श्रांतरित हो जाने के कारण या इस आदेश में अनुविष्ट किसी बात के होते पृण् भी जन्मिता नहीं होयी या उसे बंद महीं किया जाएगा अथवा किसी भी प्रनार में हो। पर कोई प्रतिकृत प्रमाव नहीं पड़ेगा। किन्तु ऐसा याव, अभियंता। श्रांति या अथ्य विधिक कार्यवाही, परिणामी कम्पनी द्वारा या उसके विरुद्ध उसी रीति से भीर उसी विस्तार तक जारी रखी जा सकेगी, अभियोजित भीर प्रवर्तित की जा सकेगी जिस रीति से भीर जिस विस्तार तक वह विधित कपनी द्वारा या उसके विरुद्ध जारी रखी जा सवती या अभियोजित और प्रवर्तित की जा सकती थी, यदि यह आदेश नहीं किया गया होता।

#### कराधान की बायल उपबंध :

नियम दिन से पूर्व विषटित कम्पनी क्षारा किए गण कारोबार के लाओं क्षीर श्रीशलाओं (जिनके श्रन्तगैत संजित हानियां भीर श्रनामेलिम श्रव- क्षयण भी है) की बाबत सभी कर परिणामी कम्पनी द्वारा ऐसी रियायतों शीर रहनों के प्रशीस रहते हुए संदेश होगे, जो इस समामेलन के परिणाम-स्वरूप श्राप कर श्रीधनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन श्रनुशात की जाएं।

9 विघटित कम्पनी क विधामान प्रधिकारियों ग्रीर ग्रन्थ कर्मचारियों की बाबत उपवध

विषटित कम्पनी में तियत वित के ठीक पूर्व नियोजित प्रत्येक पूर्णकालिक प्रधिकारी या कर्मचारी (विश्वित कम्पनी के निदेशकों की
छोड़कर) नियस विन से परिणामी कम्पनी का सथास्थिति, प्रधिकारी या
कर्मचारी हो जाएगा घौर वह उसमें भपना पव या भपनी सेवा उसी प्रविधि
के लिए श्रीर उन्त निश्वनी भार सर्तों पर घौर वैसे ही प्रधिकारों भौर
थिभेषाधिकारों के साथ धारण करेगा जो वह, यदि यह धादेण नहीं किया
गया होता, सो विषटित कम्पनी के प्रधीन धारण करता भौर वह तब लक्ष
ऐसा करता रहेगा जब तक परिणामी कम्पनी मे उसका नियोजन सम्यक
कप से समाप्त नहीं कर दिया जाता है या जब तक उसका पारिश्रमिक
घौर नियोजन की गर्ते पारस्परिक सहमित द्वारा सम्यक् कप से परिवर्तित
नहीं कर दी जाती हैं।

## 10. निवेशकों की स्थिति

विषटित कम्पनी का प्रत्येक निदेशक, जो नियन दिन के ठीक पूर्व उस कप में पद धारण किए हुए हैं, नियत दिन को विषटित कम्पनी का निदेशक नहीं रह आएगा ।

#### 11. भविष्य निधि की सबस्यता

विष्यित कम्पनी की सभी शिष्ठकारी ग्रीर कर्मेचारी, कर्मेचारी भविष्य निधि भीर प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) की स्कीम के प्रक्षीत उस कर्मेचारी मिल्लिस निधि के सदस्य बने रहेगे, जिसके के सदस्य है और स्टेट ट्रैडिंग कार्परिशन ग्राफ इण्डिया खि. इस मुद्देश के राजपल में प्रकाशन के नियत दिन से उन प्रधिकारियों ग्रीर कर्मेचारियों की बाबत, उन्हीं देशे पर, जिन पर विष्यित कम्पनी द्वारा ग्रीभदाय किया जाताचा, उन्न कर्मचारी भविष्य निधि में नियाजकों का ग्रीभदाय करेगी श्रीर करती रहेगी।

# 12. कैश्यु कार्पोरेणन श्राफ इंडिया लि. का विघटन

उस आदेश के अस्य उपनिष्ठों के अद्यंग रहते हुए ति तियत दिन से कैंग्य कार्योगन भाफ शेंडिया निर्मिटेड विघटिन हो जाएगी भीर कोई भी ध्यक्ति विघटिन कम्पनी में निरद्ध या उसके किसी निर्देशक या किसी भिक्षिकारी के विश्वत में ने हो कोई सांग करेगा भीर न ही कोई कार्यंवाती करेगा, न कोई सांग करेगा भीर न ही कोई कार्यंवाती करेगा, सिवाय यहां तक जातां तक इस आदेश के उनवन्थों को प्रवस्तित करने के लिए भावश्यक हो ।

## 13. कम्पनी पजिस्ट्राप. द्वारा भादेण का रजिस्टीकरण

केन्द्रीय सरकार, इस धादेण के राजपत में प्रक्षिसुधिन किए जाने के पण्यात् यथाणीध्र कम्पनी रिजस्तुर, दिल्ली और हरियाणा, नई दिल्ली को इस झादेश की एक प्रति भैजेंगी, जिसकी प्राप्ति पर कम्पनी रिजस्टार, दिल्ली और हरियाणा, नई दिल्ली परिणाम कम्पनी द्वारा विहित फीस का संवाय किए जाने पर धावेण की रिजस्टर करेगा और इस झादेश की प्रति की प्राप्ति की तारीख से एक मास के भीतर उसके रिजस्ट्रीकरण को अपने हस्ताक्षर से प्रमाणित करेगा। उसके प्रचात् कम्पनी रिजस्ट्रीकरण ध्रीर हरियाणा, नई दिल्ली भीतरक कम्पनी से संबंधित रिजस्ट्रीकर,

धिसिलिखित या उसके पास फाइल किए गए सभी दस्ताबेज, स्टेट ट्रेडिंग कापेरिशन भाफ इण्डिया लिमिटेड, जिसके साथ भन्तरक कम्पनी का समामेलन किया गया है, की फाइल में रखेगा भीर उन्हें समेकित करेग और इस प्रकार समेकित दस्ताबेजों की भ्रापनी फाइल में रखेगा।

14. पारणामी कम्पनी के संगम शापन और संगम मनुष्छेद:

स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन भ्राफ इण्डिया लिमिटेय के संगम ज्ञापन भीर संगम भनुष्छेद, जिस रूप में नियत दिन के ठीक पूर्व विद्यमान थे, नियस दिन से ही परिणामी कम्पनी के सगम ज्ञापन भीर संगम अनुष्ठेद हो जाएंगे ।

> [ग 24/10/90--सी एल III] थर्म. ए. राव, संयुक्त सचिव

# MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

#### ORDER

New Delhi, the 21st April, 1992

S.O. 291(E).—Whereas the Central Government is satisfied that for the purpose of securing the principal objects of the Cashew Corporation of India Limited, a Government company incorporated under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) having its Registered Office at Jawahar Vyapar Bhavan, Marg, New Delhi, and for purpose of securing the use of scarce resources of equipment, personnel and material for ensuring coordination in policy and efficient and economic expansion and working of the State Trading Corporation of andia Limited and allied units. it is essential in the public interest that the State Trading Corporation of India Limited, a Government company incorporated under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) having its Registered Office at Jawahar Vyapar Bhavan, Tolstoy Marg, New Delhi and the said Cashew Corporation of India Limited, a wholly owned subsidiary of the State Trading Corporation of India Limited should be amalgamated into single company.

And whereas, a copy of the proposed Order was sent in draft to the aforesaid companies, namely, the Cashew Corporation of India Limited and the State Trading Corporation of India Limited on the 5th June, 1991 for its publication in two newspapers inviting objections suggestions.

And whereas, the scheme of amalgamation of the aforesaid companies was published in two Newspapers on 13th & 14th June 1991 for inviting objections and suggestions; And whereas, no suggestion or objection has been received by the Central Government till the 20th September, 1991, in regard to the scheme of amalgamation from any person.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-sections (1) and (2) of Section 396 of the said Act, the Central Government hereby makes the following order to provide for the amalgamation of the said two companies, namely:—

- 1. Short Title.—This order may be called the Cashew Corporation of India Limited and the State Trading Corporation of India Limited (Amalgamation) Order 1992.
- 2. Definitions.—In this order, unless the context otherwise requires,
  - (a) "appointed day" means the date on which this order is notified in the Official Gazette.
  - (b) "disselved company" means the Cashew Corporation of India Limited.
  - (c) "resulting company" means the State Trading Corporation of India Limited.
- 3(a) The Share Holding Pattern of the two Companies:
  - (i) The State Trading Corporation of India Ltd. (holding company) as on 31st March, 1990.

Name of shareholder Number of shares Amount(Rs.)

President of India and its nominees 3000(30) 30,00,00,000 (Rs. 100 each)

(ii) The Cashew Corporation of India Limited (Subsidiary company) as on 31st March, 1990.

Name of Number of shares Amount(s) sharehold:r

The State Trading 150000 1,50,00,500 Corporation of Tadia Limited and its Nominets (Rs. 100 each)

- (b) All the 150000 equity shares of Rs. 100 each fully paid up in the Cathew Corporation of India Limited which are now held in the name of the State Trading Corporation of India Limited including its nominees shall be cancelled.
- (c) Since the entire share capital of the Cashew Corporation of India is held in the name of the State Trading Corporation of India Limited including their nominees, the resulting company shall not be required to send any further notice to the persons, whose names appear immediately before the appointed day, in the Register of Members of the dissolved company.
  - 4. Amalgamation of the Companies
    - (i) On and from the appointed day, the entire business and undertaking of the Cashew Corporation of India Limited as where is, including all the properties, movable or immovable and other assets of what-so-ever nature e.g. machinery and all fixed assets, leases, tenancy, rights, investments in shares or otherwise, stock-intrade, workshop tools, goods-in-transit,

advances of monies of all kind book-debts, outstanding monies, recoverable claims, agreements, industrial and other licences and periods, imports and other licences, letters of intent and all rights and powers of every description to all mortgages and charges and hypothecation, guarantees, and all rights whatsoever effecting the said respecties of the Cashev Corporation of India Limited shall without further act or deed be transferred to and vest in the State Trading Corporation of India Limited in accordance with the law in force.

(ii) For accounting purposes, the amalgamation shall be effected with references to the audicid accounts and balance sheets as on the 31st March, 1990 of the two companies and the transactions thereafter shall be trooted into a comman account. It dissolved company shall not be required to prepare its final accounts as colary later date and the resulting company shall take over all assets and liabilities according to the balance sheet as on the 31st March 1990 and accept full responsibility for all transactions thereafter.

Explanation.—The "Undertaking of the dissolved company" shall include all rights, powers, authorities and privileges and all property movable or immovable, including eash balances, reserves revenue balances, including eash balances, reserves revenue balances, investments and all other interests and rights in or arising out of such property as may belong to or be in the possession of the dissolved company immediately before the appointed day, and all books, accounts and documents relating thereto and also all debts liabilities, dutils and obligations of whatever kind then existing of the dissolved company.

- 5. Transfer of certain items of Property.—For the purpose of this order, all the profits or lesses, or both, if any, of the disselved company as on the appointed day, and the revenue reserves or deficits or both, if any, of the disselved company when transferred to the resulting company shall respectively form part of the profits or losses and the revenue reserves or deficits, as the case may be, of the resulting company.
- 6. Saving of Contracts etc.—Subject to the other provisions contained in this order, all contracts, deeds, loads, agreements and other instruments of whatever mature to which the dissolved company is a party, subsisting or having effect immediately before the appointed day, shall have full force and effect, against or in favour of the resulting company and may be enforced as fully and effectively as if the resulting company had been a party thereto.
- 7. Saving of Legal Proceeding.—If on the appointed day, any suit, prosecution, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the dissolved company be pending, the same shall not abate or be discontinued, or be in any way prejudicially affected by reason of the transfer to the resulting company of the undertaking of discoved company or

of anything contained in this order. But the suit, prosecution appeal or other legal proceeding may be continued, prosecuted and enforced by or against the resulting company in the same manner and to the same extent as it would or may be continued, prosecuted and enforced by or against the dissolved company, if this order had not been made.

- 8. Provision with respect to Taxation.—All taxes in respect of profits and gains (including accumulated losses and unabsorbed depreciation) of the business carried on by the dissolved company before the appointed day shall be payable by the resulting company subject to such concessions and retiefs as may be allowed under Income Tax Act, 1961 (43 of 1961) as a result of this amalgamation.
- 9. Provisions respecting existing Officers and other Employees of the Dissolved Company.—Every wholetime officer or employee (excluding the directors of the dissolved company) employed immediately before the appointed day in the dissolved company, shall. as from the appointed day, become an officer of employee as the case may be, of the resulting company and shall hold his office or service therein by the same tenure and upon the same terms and conditions with the same rights and privileges as he would have held the same under the dissolved company, if this order had not been made, and shall continue to do so unless and until his employment in the resulting company is duly terminated or until his remuneration and conditions of employment are duly altered by mutual consent.
- 10. Position of Directors.—Every director of the dissolved company holding office as such immediately before the appointed day shall cease to be a director of the dissolved company on the appointed day.
- 11. Membership of the Provident Fund.—All officers and employees of the dissolved company shall continue to be members of the Employee's Provident Fund under the scheme of the Employee's Provident Funds and Miscellaneous Provision Act 1952 (19 of 1952) of which they are members and the State Trading Corporation of India Limited shall with effect from the appointed day of publication of this order

in the Official Gazette make and continue to make the employer's contributions to the said Employee Provident Fund in respect of these officers and employees at the same rates as were being made by the dissolved company.

- 12. Dissolution of the Cashew Corporation of India Limited.—Subject to the other provisions of this order, as from the appointed day, the Cashew Corporation of India Limited shall be dissolved and no person shall make, assert or take any claims, demands or proceedings against the dissolved company or against a director or an officer thereof in his capacity as such director or officer, except in so far as may be necessary for enforcing the provisions of this Order.
- 13. Registration of the Order by the Registrar of Companies.—The Central Government, shall soon as, may be, after this order is notified in the Official Gazette, send to the Registrar of Companies, Deim and Haryana, New Delhi a copy of this order, on receipt of which the Registrar of Companies, Della and Haryana, New Delhi shall register the order on payment of the prescribed by the resulting company and certify under his hand the registration thereof within one month from the date of receipt of a copy of this order. Thereafter the Registrar of Companies Delhi and Haryana, New Delhi shall place all documents registered, recorded or field with him relating to the transferor company on the file of the State Trading Corporation of India Limited with whom the transferor company has been amalgamated and consolidate these and shall keep such consolidated documents on his file
- 14. Memorandum and Articles of Association of the Resulting Company.—The Memorandum and Atticles of Association of the State Trading Corporation of India Limited as they stood immediately before the appointed day shall, as from the appointed day, be the Memorandum and Articles of Association of the resulting company.

iNo. 24|10|90-CL-[1] Y. A. RAO, Jt. Secy.